अङ्क-२४
जुलाई-दिसम्बर २०१४

वेदविद्या
ISSN-2230-8962

वेदों में पर्यावरण एवं वन्यजीव-संरक्षण का आर्थिक महत्त्व

एस.के. पाठक,
सुनीता पाठक एवं जी.के. शर्मा

भारतीय-सभ्यता व संस्कृति के प्राचीनतम धरोहर वेद हैं । भारतीय-मनीषा के अद्यतन उपलब्ध प्रमाणों में वेदों का स्थान सर्वोपरि है । इसलिये आधुनिक विषयों का प्रवर्तन भले ही नया दिखाई देता है परन्तु उनके मूलस्वरूप बीज-रूप में हमें वेदों में प्राप्त होते हैं । **'परस्परोपग्रहोरू जीवानाम्'** अर्थात् सृष्टि का हर जीव परस्पर एक दूसरे के लिये है न कि घात (हानि) के लिये । वन्य-जीवों की उपयोगिता के कारण इनका संरक्षण भारतीय-संस्कृति का विशिष्ट और अभिन्न अङ्ग है । इस उपग्रह पर सभी पौधों एवं पशु-पक्षी जो कि मानव द्वारा पाले नहीं जाते, वन्य-जीवों में आते हैं । अथर्ववेदीय ऋषियों ने शुद्ध तथा समृद्ध पर्यावरण को मानव-जीवन के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण एवम् अनिवार्य माना है ।

त्रीणिच्छन्दांसि कवयो वि येतिरे पुरुरूपं दर्शतं विश्वचक्षणम् ।
आपो वाता ओषयस्तान्येकस्मिन् भुवन आर्पितानि ॥[१]

अर्थात् आपः यानि जल; वातः यानि वायु तथा औषधयः यानि पेड़-पौधों- इन सभी ने संसार को आच्छादित कर रखा है ।

अन्तर्धिर्देवानां परिधिर्मनुष्याणाम् ।[२]

अर्थात् प्रकृति के प्रत्येक कण में अन्तर्धि, आन्तरिक शक्ति जो कि गति एवम् ऊर्जा तथा परिधि बाह्यशक्ति जो कि रक्षा प्रदान करती है। बात चाहे पर्यावरण की हो अथवा वन्यजीव-संरक्षण की; वैदिकसाहित्य में इसके पर्याप्त साक्ष्य मौजूद हैं।

तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः ।[३]

ऋग्वेद जब पृथ्वी को माता तथा आकाश को पिता कहता है तो वह सम्पूर्ण पारिस्थितिकी को संरक्षण की अप्रत्यक्ष प्रेरणा देता है । इसके बाद यजुर्वेद जब पृथिवी, जल तथा औषधियों की हिंसा करने का निषेध करता है, तब यह स्पष्ट-रूप से घोषित किया जाता है कि हम न तो पृथ्वी के प्रति हिंसा करें और न ही औषधियों के प्रति हिंसा करें । इन वेदवाक्यों से यह स्पष्ट है कि न केवल पृथ्वी अपितु

---

[१] अथर्ववेद १८.१.१७
[२] अथर्ववेद १२.२.४४
[३] अथर्ववेद १.४.४

वनौषधियों एवं वन्य-प्राणियों की भी रक्षा किया जाना अत्यावश्यक है । वे सम्पूर्ण तन्त्र अर्थात् पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश को संरक्षित करने का न केवल उपदेश देते हैं अपितु प्रयत्न भी करते हैं ।

अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजम् ।[१]

अर्थात् जलों में अमृत एवं रोग-निवारण की क्षमता होती है । वन्य-जीव जंगलों को बनाये रखते हैं, वन जलों को आकर्षित कर बरसाते हैं । मेघ को **'वानस्पत्य'** यानि वनस्पति के निमित्त से उत्पन्न होने वाला कहा गया है । वनस्पति वायु को शुद्ध करते हैं । इसका वेदों में भी उल्लेख है;-

ओषं धयेति तरुः औषधयः सम्भवन् ।[२]

यानि औषधियाँ प्रदूषकों का अवशोषण करती हैं । मैत्रायणीसंहिता भी कहती है **'वायु गोपा वै वनस्पतयः'** ३.९.४.१ अर्थात् वायु वनस्पतियों की रक्षक होती है । इस प्रकार पूरा पारिस्थितिकीतन्त्र यथावत् बना रहे; इसके लिये वैदिक-ऋषियों ने भरपूर प्रयास किये । अथर्ववेद में सभी प्रकार के प्राणियों के लिए ब्रह्म अर्थात् परमपिता उनके जीवन की रक्षा करता है; कहकर इस तथ्य को प्रमाणित किया है ;-

सर्वो वै तत्र जीवति गौरश्वः पुरुषः पशुः ।
यत्रेदं ब्रह्म क्रियते परिधिर्जीवनाय कम् ॥[३]

इससे स्पष्ट है कि ईश्वर सभी जीवों को जीने का समान अधिकार प्रदान करता है। वैदिक-ऋषि चाहते थे कि न तो किसी औषधि यानि पेड़-पौधों आदि और न ही किसी प्राणीमात्र की हिंसा की जानी चाहिए । तभी प्रकृति का सन्तुलन बना रहता है और पर्यावरण की शुद्धता भी बनी रहती है । जैसा कि यजुर्वेद कहता है;-

'द्यां मा लेखी अन्तक्षि मा हिंसी वनस्पते शतवाशमे विरोट'

घने जंगल वन्यजीवों के लिये आवास एवम् अनुकूल वातावरण निर्मित करते हैं, वहीं वन्य-जीव जंगलों को बनाये रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । शेर, सिंह, चीता, भालू इत्यादि हिंसक वन्य-प्राणियों की जंगलों-जंगलों में उपस्थिति के कारण ग्राम्य-पशु एवं मानव हानि के डर से वनों में प्रवेश नहीं करते हैं जिससे उनकी हरियाली यथावत् बनी रहती है । अथर्ववेद १९.४९.४ में रात्रि में हिंसक वन्य-जीव के शक्तिवर्धक प्रदर्शन के कारण ग्राम्य-पशुओं के भागने तथा मनुष्यों के डरने के कारण चीखने-पुकारने का वर्णन मिलता है ।

अरण्यानिर्हन्ति ।[४]

---

[१] ऋग्वेद १.८९.४
[२] शतपथब्राह्मण २.२.४.५
[३] अथर्ववेद ८.२.२५
[४] ऋग्वेद १०.१४६.५

यानि अरण्यगत वन्य-जीव किसी की भी बिना कारण हिंसा नहीं करते और निर्भीक-रूप से अपना जीवन-यापन करते हैं ।

अन्यश्चेन्नाभिगच्छति ।[१]

अर्थात् मानव पर्यावरण के महत्त्व और वन्य-प्राणियों के योगदान से भलीभाँति परिचित थे, इसलिये उन पर प्रहार नहीं करते थे । इस तरह की अहिंसा की भावना वैदिककाल से चली आ रही है । हमारे ऋषियों ने प्राणिमात्र में परमात्मा और पूज्यभाव तथा आत्मभाव बतलाया है । मानव एवं पशु के मध्य समुचित सन्तुलन स्थापित करने के लिये वन्य-प्राणियों को भी अनेक सूक्तों का देवता व ऋषियों के नाम से नामकरण किया। अथर्ववेद के विभिन्न मन्त्रों में श्येनः, गृध्रः, वयः, तार्क्ष्यः, वृश्चिकादयः, तक्षकः, पशुः तथा व्याघ्रः इत्यादि को विभिन्न सूक्तों का देवता और कपिञ्जल व गरुत्मान् आदि को ऋषि माना गया है । ऋग्वेद के अनुसार पशुओं को तीन हिस्सों में विभक्त किया गया है;-

पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्यान्ग्राम्याश्च ये ।[२]

१- वायव्यान् -- यानि वायु में विचरण करने वाले ।

२- आरण्यान् -- यानि वनों में विचरण करने वाले ।

३- ग्राम्यान् -- यानि गाँवों में विचरण करने वाले ।

अथर्ववेद ११/२/२४ व ११/२/२५ के अनुसार वनों के हित के लिये मृग, हंस इत्यादि वन्य-जीव आवश्यक हैं तथा मानव इन वन्य-प्राणियों को स्वयं नहीं मारता था क्योंकि उन पर पशुपति महादेव का अधिकार समझता था तथा वे आपस में लड़कर मरते थे या परमात्मा द्वारा स्वयं जीव-सन्तुलन किया जाता है । मनुष्य वन्य -जीवों से डर के कारण रात्रि में उनसे सुरक्षित रहने के उपाय करता था तथा रात्रि से प्रार्थना करता था कि हे रात्रि ! आप सभी हिंसक जीव-जन्तुओं से हमारी रक्षा करना। अकल्याणकारी हिंसक वन्य-जीव मानव-बस्ती से दूर रहें तथा कल्याणकारी जीव ही हमारे पास आने दें । मानव वन्य-प्राणियों का वध नहीं करने का प्रयास करता था एवम् उनको अपने क्षेत्र में प्रवेश को असफल करता था । इसी प्रकार ऋग्वेद १.११६.१४ में भी अश्विनीकुमारों द्वारा भेड़िये के मुँह के अन्दर से बटेर निकालने का वर्णन मिलता है ।

अथर्ववेद में कई मन्त्रों में वन्य-प्राणियों का, औषधीय-महत्त्व का वर्णन मिलता है । पर्यावरण तथा मानव के लिये वन्य-प्राणियों की महत्ता को अनेक मन्त्रों में वर्णित किया गया है एवं प्रार्थना की गई है कि हे सूर्य ! आप मुझको अनेक रूप वाले पशुओं से पूर्ण करें (७.१६.१९.; १७.२.२४) । जो हिंसक वन्य-जीव मानव के लिये घातक होते थे उनको अन्य विकल्प के अभाव में मार डालने के उल्लेख हैं ।

---

[१] ऋग्वेद १०.१४६.५

[२] ऋग्वेद १०.९०.८

आर्यों ने अथर्ववेद में वन्य-जीवों की पर्यावरण की शुद्धता तथा सन्तुलन में विशेष भूमिका मानी है । उन्होंने उनके सरंक्षण की सुस्पष्ट नीति निर्धारित कर रखी थी ।

येषां जातानि बहुधा महान्ति तेभ्यः सर्पेभ्यो नमसा विधेम ।[१]

अर्थात् वे विषधर सर्पों को भी नमन करते थे । यजुर्वेद एवम् ऋग्वेद में वन्य पशु-पक्षियों के वध पर प्रतिबन्ध लगाया गया है तथा इस दुष्कृत्य-कर्ता को यातुधान कहा गया है; साथ ही राजा को दुष्कृत्य कर्ता को दण्डित करने की सलाह भी दी गई है।मानव-जाति का धरा पर अस्तित्व एवं पारिस्थितिक- सन्तुलन बना रहे, उसके लिये वन्य-जीवों का संरक्षण अति आवश्यक है । देश में वन्य-प्राणियों की सङ्ख्या की लगातार कमी के कारण प्रकृति में परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगे हैं तथा कुछ जीव- जन्तु सङ्कटापन्न स्थिति में पहुँच गये हैं। इसलिये सन्तुलित पर्यावरण के लिये वन्य-जीवों की रक्षा आवश्यक है । वन्य-प्राणियों का संरक्षण दो प्रकार से कर सकते हैं ;-

१. **स्वस्थान में संरक्षण -** इसमें वन्य-प्राणियों का संरक्षण प्राकृतिक स्थान पर ही होगा ।
२. **मूल स्थान पर संरक्षण -** अधिक प्रभावशाली होगा । यहाँ संरक्षित प्राणी स्वस्थ एवं स्वभाव में विकृतिरहित होते हैं ।
३. **अन्यत्र स्थान पर संरक्षण** - इसमें वन्य-प्राणियों का संरक्षण उनके मूल स्थान से दूर किसी उद्यान, चिड़ियाघर या कृत्रिम घरों में होगा । यहाँ संरक्षित प्राणियों में बीमारियों के कारण अस्वस्थ तथा स्वभाव में विकृतियाँ आ जाती हैं । यहाँ संरक्षण अधिक उपादेय नहीं होगा।

वन्य-प्राणियों का संरक्षण एक अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दा है और विलुप्त प्राणियों की सुरक्षा हेतु १९६२ में विश्वव्यापी एक कोष की स्थापना की गई थी परन्तु आशाजनक परिणाम प्राप्त नहीं हुए । भारतसरकार ने वन्यजीव-संरक्षण हेतु १९५२ में वन्यजीव बोर्ड की स्थापना की तथा राष्ट्रीय पार्क एवम् अभयारण्य बनाये गये । वन्यजीव-सुरक्षा के लिये १९७२ में सुरक्षा-अधिनियम बनाकर शिकार को निषेध किया गया ।

वन प्राकृतिक-सम्पदा है तथा शुद्ध व समृद्ध पर्यावरण के द्योतक हैं । किसी भी राष्ट्र की अच्छी अर्थव्यवस्था के लिये उसके कुल भू-भाग का ३३ प्रतिशत भाग जंगलों से ढँका रहना चाहिए, जबकि भारत का १८ प्रतिशात भाग ही वनावृत है । अथर्ववेद , १२.११.१ के अनुसार वनों से आच्छादित तलहटियों से युक्त धरा सबको सुख देती है । अथर्ववेद, १२.१.२७ में बतलाया गया है कि जिस धरा पर वृक्ष व वनस्पतियाँ हमेशा खड़ी रहती हैं वह भूमि समस्त प्राणियों का भरण-पोषण करने में सक्षम होती है । वन्य- जीव किसी भी देश की आय का साधन होते हैं । भारत जैसा विकासशील देश अपनी

[१] अथर्ववेद १०.४.२३

पृथ्वी पर जंगलों में इको पर्यटन-स्थल स्थापित कर विदेशी- मुद्रा अर्जित करने का साधन बना सकता हैं । वन्य-प्राणी मानव-जाति के लिये मनोरञ्जन एवम् आनन्दित होने का माध्यम भी होते हैं ।

हमारे वेदों के दर्शाये गये मार्ग पर चलकर, सन्तुलित, शुद्ध व समृद्ध पर्यावरण को बनाये रखते हुए, वन्य-प्राणियों का संरक्षण करते हुए, मानव-जाति अपना कल्याण कर सकती है, साथ ही अपने देश के आर्थिक-विकास में योगदान दे सकती है ।

एस.के. पाठक, सुनीता पाठक एवं जी.के. शर्मा

बी.एल.पी. शास. स्ना. महाविद्यालय, महू , इन्दौर